किस स्नेह परस ने छेड़ दिया

किस स्नेह-परस ने छेड़ दिया
निष्प्राण पड़ी-सी वीणा को?
चिर श्रांत, थकित, चिर मौन और
चिर एकाकिनि, चिर क्षीणा को?

तुम समर्पित होओ। तुम सिर झुकाओ। तुम उसकी अनुकंपा पर भरोसा करो। जिसने जीवन दिया है वही परम जीवन भी देगा। न तो जीवन तुमने कमाया है और न परम जीवन तुम कमा सकते हो। कमाने की बात ही भ्रांत है। कमाने की बात में ही धोखा है। कमाने की बात में ही अहंकार के लिए आड़ मिल गई, बचने का उपाय मिल गया।

किस स्नेह-परस ने छेड़ दिया
निष्प्राण पड़ी-सी वीणा को?
चिर श्रांत, थकित, चिर मौन और
चिर एकाकिनि, चिर क्षीणा को?

जिसके ढीले-से मौन तार,
झंकृत हो गाना भूल गए
मन को, मस्तक को, नस-नस को,
पल में सिहराना भूल गए।

जिसका मन शिथिल, पड़े जिसकी
वाणी पर थे चुप के ताले।
जिसके तन पर अगनित जाले,
दुःख की मकड़ी ने बुन डाले।

किस स्नेह-परस ने छेड़ दिया?
सब तार तने, झंकार उठी।
ज्यों अंधकार में रजनी के,
हो ज्योत्स्ना की दीवार उठी।

किस स्नेह-परस ने छेड़ दिया?

गानों के सागर फूट पड़े।
संगीत भरे नभ से तारे
तानों के अगनित टूट पड़े।

ध्वनि के खग उड़-उड़ फैल गए,
और दशों दिशाएं जाग उठीं।
अंबर की सोई सी स्मृतियां
सुन कर यह अभिनव राग उठीं।

झुको! समग्ररूपेण झुको और तुम भी पाओगे—

किस स्नेह-परस ने छेड़ दिया?
सब तार तने, झंकार उठी।
ज्यों अंधकार में रजनी के,
हो ज्योत्स्ना की दीवार उठी।

किस स्नेह-परस ने छेड़ दिया?

गानों के सागर फूट पड़े।
संगीत भरे नभ से तारे
तानों के अगणित टूट पड़े।

तुम पर वर्षा हो सकती है, लेकिन तुम अपने से इतने भरे हो कि परमात्मा चाहे भी तो तुम्हारे भीतर जगह नहीं है। तुम अपने से अपने को खाली करो, रिक्त करो। भक्ति का इतना ही अर्थ है कि भक्त अपने से अपने को रिक्त कर ले, खाली कर ले, शून्य हो जाए, ना कुछ हो जाए। कह सके, मैं नहीं हूं। बस, जिस क्षण तुम समग्र मन प्राण से कह सकोगे, 'मैं नहीं हूं' उसी क्षण परमात्मा है।

— **ओशो**

प्रेम–रंग–रस ओढ़ चदरिया, प्रवचन–5
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)